RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | No.12 | December 2021 | pp. 126-129
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Death Rites in Kol Tribe | कोल जनजाति में मृत्यु संस्कार

*[1]Om Prakash and [2]Dr. Ashok Ahirwar

[1]Research Scholar, History Department, Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (M.P.)
[2]Professor, History Department, Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (M.P.)

Abstract

Death is the ultimate ultimate truth of life, one who has come in this world has to go one day or the other. Like other communities of Baghelkhand region, people of Kol tribe also perform death rites, but some specialties still exist in the traditional way. Kol Jana believes that death happens to the body, the soul is immortal. According to the tradition, salvation can be achieved only after performing the funeral rites, that is why the ashes (flowers) are immersed in holy rivers like Ganga or Narmada. Food, water is arranged for the dead soul and water is kept in a pitcher in the Peepal tree. Sutak is considered in the family for ten days. The person who donates fire always carries iron so that the phantom souls cannot do any wrong. On the tenth day, the dead soul is bid farewell by law, after which they become ancestors and they are recognized as God. As the case may be, household items are donated and food is provided to the family and relatives.

Keywords: *Kol, death rites, Baghelkhand, Agnidan, Sutak, Thirteenth (Terahavin), Mundan*

Abstract in Hindi

मृत्यु जीवन का अंतिम परम सत्य है इस संसार में जो आया है उसे एक न एक दिन जाना है। बघेलखण्ड क्षेत्र के अन्य समुदायों की भांति कोल जनजाति के लोग भी मृत्यु संस्कार सम्पन्न करते है किन्तु कुछ विशिष्टताएँ आज भी पारम्परिक रूप से विद्यमान है। कोल जन की मान्यता है कि मृत्यु शरीर की होती है आत्मा अमर है। जीव का परम्परानुसार अंत्येष्टि संस्कार करने के बाद ही मुक्ति मिल सकती है इसीलिए गंगा या नर्मदा जैसी पवित्र नदियों में अस्थि (फूल) विसर्जित किया जाता है। मृत आत्मा के लिए भोजन, पानी की व्यवस्था की जाती है तथा पीपल के वृक्ष में घड़े में जल भर कर रखा जाता है। दस दिन तक परिवार में सूतक माना जाता है। अग्निदान करने वाला व्यक्ति सदैव लोहा लिए रहता है जिससे प्रेत आत्मा किसी प्रकार का अनिष्ठ न कर सकें। दसवें दिन विधि विधान से मृत आत्मा की विदाई की जाती है इसके बाद वह पितर हो जाते हैं और उनको देवतुल्य मान्यता प्राप्त होती है। यथास्थिति गृहस्थी की वस्तुएँ दान दी जाती हैं और परिवार तथा सगे सम्बन्धियों को भोजन कराया जाता है।

Keywords: *कोल, मृत्यु संस्कार, बघेलखण्ड, अग्निदान, सूतक, तेरहवीं, मुण्डन।*

Article Publication

Published Online: 15-Dec-2021

***Author's Correspondence**

Om Prakash

Research Scholar, History Department, Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (M.P.)

shekhar1090[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

मध्यप्रदेश का बघेलखण्ड अंचल कोल जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। सदियों से कोल जनजाति के लोग यहाँ निवास करते हैं। कोल जनजाति के व्यक्ति कृषक मजदूर के रूप में जीवन यापन करते है। ये मुण्डा समूह की जनजाति है। श्याम वर्ण, कृषकाय, मोटे ओठ तथा मध्यम कद इनकी शारीरिक विशेषता है। ईमानदार, मेहनती तथा स्वामीभक्त, स्वभाव सादा व सरल होता है। सदियों से हिन्दू के सम्पर्क में होने के कारण इन्होंने कुछ हिन्दू रीति रिवाजों को भी अपना लिया है।

मृत्यु ही जीवन का अंतिम सत्य है, सभी जनजातियों की भाँति कोल जनजाति में भी किसी परिवार जन या करीबी की मृत्यु एक दुःखद समय होता है। स्वयं एवं अपने नजदीकियों को धैर्य की कामना के साथ एक ही आवाज हृदय से मिलती है 'राम नाम सत्य है सबकी यही गति है'। अंतिम समय में अपने प्रभु को याद करना तथा उनके नाम का स्मरण करना ईश्वर के प्रति सामिप्य भाव मन को शान्त रखने तथा समीपता का सुखद एहसास दिलाता है। अंतिम दर्शन तथा अंतिम यात्रा के साथ चलने वाले भी राम–राम नाम का स्मरण करते हुए उस परम सत्ता से मृतक व्यक्ति के लिए बैकुंठ (स्वर्ग) के स्थान की कामना करते है।

मृत्यु के अंतिम क्षणों को निकट जानकर कोल जन गाय का बच्चा (बछिया) लेकर आते है और मरने वाले व्यक्ति को बछिया की पूँछ पकड़ाते है विश्वास है कि यह गाय मृतक को स्वर्ग तक पहुँचाने में सहायता करती है। स्वर्ग के रास्ते में वैतरणी नदी पड़ती है जिसे गाय की पूँछ पकड़कर पार कर सकते है ऐसी मान्यता हिन्दू धर्म ग्रन्थों में है। वह गाय जिसकी पूछ पकड़कर वह प्रायः नदी पार कर गायों को चराने के लिए ले जाता था वही अंतिम समय में उसके साथ होती है इससे प्राणि मात्र की महत्ता को समझा जा सकता है। इसके साथ ही मृतक के मुँह में गंगा जल तथा तुलसी जल डाला जाता है यदि सम्भव हो सके तो कुछ स्वर्ण घिसकर गंगा जल या पानी के साथ मृतक के मुंह में परिवार के लोगों तथा सगे सम्बन्धियों के द्वारा डाला जाता है। इस प्रकार से मृतक को शुद्ध (पवित्र) किया जाता है जिससे उसकी आत्मा बैकुण्ड धाम (स्वर्ग) में जाने के लिए तैयार हो सके।

सामान्यतया घर के बाहर द्वार या बरामदे में एक स्थान को गाय के गोबर से लीप कर तैयार किया जाता है और मरने वाले व्यक्ति को जमीन पर लिटाया जाता है। जिस व्यक्ति की मृत्यु चारपाई या बिस्तर पर होती है उसे नष्ट कर दिया जाता है। व्यक्ति को अंतिम क्षणों में धरती माता की गोद में लिटा दिया जाता है। उसका पैर दक्षिण दिशा (यमराज का स्थान) तथा सिर उत्तर दिशा में होता है। घर परिवार के लोगों तथा निकट सम्बन्धियों को अंतिम समय की सूचनाएँ भेज दी जाती है। मृत्यु के बाद मृतक के पार्थिव शरीर को किसी साफ कपड़े से ढक दिया जाता है जब तक की कफन नहीं आ जाता है। यदि यह शाम या रात्रि का समय है तो सुबह होने का इन्तजार किया जाता है। किसी भी शव का अंतिम संस्कार रात्रि के समय नहीं किया जाता है। मृतक के शव को प्रायः घर तथा आसपास के लोग पार्थिव शरीर के आसपास करूप रूदन करते हुए मृतक के साथ अपने सुःखद क्षणों का स्मरण करते हुए रोते है। एक दीपक तथा अगरबत्ती पार्थिव शरीर के आसपास जला दिया जाता है।

करीबी रिश्तेदारों तथा आसपास के शुभचिन्तकों के आ जाने के बाद हरे बांस की टिट्ठी तैयार की जाती है। जिस पर मृतक को लिटाया जाता है और शमशान तक लोगों द्वारा अपने कंधे पर उठाकर ले जाया जाता है उसके चारों सिरों पर एक–एक व्यक्ति होते है और ये व्यक्ति बदलते रहते है। ये आगे आगे चलते है तथा पीछे–पीछे लोग राम राम सत्य है, सबकी यही गति है, राम–राम कहते हुए चलते है।

सामान्य मान्यता यह है कि जब तक बच्चे का मुण्डन संस्कार नहीं होता है, मृत्यु होने पर शव को दफनाया (मिट्टी में गाड़ देना) जाता है। जन्मते ही मरे बच्चे से लेकर 7–8 वर्ष की उम्र के बच्चे को न तो जलाते हैं और नही उसकी अर्थी बनती है। उन्हें कोरे कपड़े में लपेटकर गोद में ले जाते है, मृत शरीर को गड्ढे में रखकर नमक डालकर ऊपर से मिट्टी डाल देते हैं। विषैले जन्तुओं के काटने से मृत व्यक्तियों को केले के तने में बांधकर दिया जाता है, बहा दिया जाता है।

कोल जनजाति में मृत्यु के पश्चात शव को जलाने, दफनाने तथा जल दाह की प्रथा है। बच्चों तथा कम उम्र के अविवाहितों को दफनाया जाता है तथा वयस्क तथा बुर्जुर्गों को जलाते है। दाह संस्कार के लिए तैयार करने के पूर्व शव को गंगाजल मिश्रित जल से स्नान कराते है और विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो श्रृंगार कराया जाता है। लोक विश्वास यह है कि गोदना मरने के पश्चात जाता है इसलिए पुरुष व स्त्रियाँ अपने पति व पत्नी के नाम का शरीर में गोदना गुदवाते हैं। वृद्ध स्त्री पुरुष को नये कपड़े पहनाये जाते है तथा शव को सफेद कपड़े (कफन) से ढक दिया जाता है। इसके बाद शव (मिट्टी) को ले जाते समय सिर पीछे और पैर आगे रखकर शमशान की ओर ले जाते है। श्मशान पहुँचने के पूर्व किसी जगह पर अर्थी की दिशा बदल देते हैं। शव यात्रा में प्रायः होता है स्त्रियाँ नहीं सम्मिलित होती है कुछ स्थानों पर स्त्रियाँ भी शमशान तक जाती है लेकिन अग्नि देने के पहले वापस आ जाती है। शव यात्रा में पीछे चलने वाले व्यक्ति मखाना, बताशा, फूल, शव की ओर फेंकते चलते है। सुहागन स्त्री के मरने पर स्त्री का पूरा श्रृंगार किया जाता है। पति अर्थी को कंधा देता है, पति का कंधा पाना सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। भरा–पूरा परिवार (नाती, पन्ती) छोड़कर मरने वाले बुजुर्ग की मृत्यु मुक्ति का अवसर होता है बैण्ड बाजे के साथ अर्थी निकाली जाती है। यदि पंचक के दौरान मृत्यु होती है तो अर्थी के साथ पाँच वेल फल या पाँच पुतले रखे जाते हैं। लोगों की यह धारणा है कि पंचक में मृत्यु होने से घर, परिवार या रिश्तेदारों में पाँच लोगों के मरने की सम्भावना होती है।

कुछ लोग पहले से शमशान पहुँचकर चिता तैयार करते है। सामान्यतया गाँव तथा आसपास के लोग मृतक के घर आते समय कुछ लकड़ी लेकर आते है जिससे चिता तैयार हो सके। चिता पर रखने के पूर्व सभी के लिए मृतक के अंतिम

दर्शन के लिए मुंह खोल दिया जाता है जो ढका होता है। चिता सामान्यता उत्तर–दक्षिण बनायी जाती है यह लगभग 6–7 फीट लम्बी, 3 फीट चौड़ी तथा 4 फीट ऊँची बनायी जाती है। चारों दिशाओं पर एक–एक लकड़ियाँ गाड़ दी जाती है जिससे कि लकड़ियाँ सरक न सकें। लकड़ियों के बीच थोड़ी जगह छोड़ दी जाती है जिसमें पुआल या जलती आग पकड़ने वाली पतली लकड़ियाँ, डंठल आदि डाल दिया जाता है। आग जल्दी पकड़ने के लिए शरीर पर घी या तिल का तेल लगाया जाता है। चिता में धूप और चीनी आदि आग पकड़ने वाली चीजें डाली जाती हैं।

इसके बाद चिता पर शव को रखते है। मृतक का बड़ा या छोटा लड़का या भाई, स्त्री का पति चिता की सात बार परिक्रमा करके अग्निदान करता है। चिता में अग्नि पहले सिर की ओर लगायी जाती है। चिता की अग्नि शान्त हो जाने के पश्चात कपाल क्रिया की जाती है, जिसमें एक बाँस से सिर पर प्रहार किया जाता है जिससे सिर टूट जाये। अग्निदान करने के बाद अग्निदान करने वाला व्यक्ति चिता की ओर पीठ करके कुछ दूर बैठ जाता है। चिता की अग्नि शान्त होने पर सभी व्यक्ति छोटी–छोटी लकड़ी के टुकड़े चिता की प्रदक्षिणा करके चिता में फेंककर नमन करते हैं।

चिता पर शव को लिटाते समय सिर उत्तर तथा पैर दक्षिण दिशा की ओर होता है। चिता पर शव को लिटाने के पहले एक कपड़ा डाल दिया जाता है तथा स्त्री के शव को पीठ की तरफ पुरुष के शव को पेट की तरफ लिटाया जाता है। मुट्ठियाँ खुली होती है, सही ढंग से लिटाने के बाद कफन से शव को ढक दिया जाता है और अग्निदाह देने वाले व्यक्ति द्वारा कहा जाता है कि जाओ और बैकुण्ठ धाम सिधारों। इसके बाद सात बार चिता की परिक्रमा करके अग्निदाह दिया जाता है। चिता के लिए आग बसोर देता है।

जिस व्यक्ति ने अग्निदान दिया है वह एक हाथ में लोटा लेकर नहाने के स्थान नदी तालाब, वापस आता है और सभी लोग एक के पीछे एक चलते हुए उसका अनुशरण करते है। नदी या तालाब पर सभी लोग स्नान करते है। मुखाग्नि देकर लौटे लोग घर के पास आकर नीम की पत्ती कुतरते हैं और पैर से आग छूते हैं।

अग्निदाह के तीसरे दिन परिवार, गाँव तथा रिश्तेदार एकत्रित होकर शमशान जाते है और एक सफेद कपड़े पर सभी हड्डियों को एकत्रित करते है तथा वहाँ गाय के गोबर से लीपकर फूल, दूध, तिल, गंगाजल, अगरबत्ती अर्पित कर पिण्डदान करते है इसके बाद अस्थियाँ को लेकर गंगा जी में विसर्जित करके वापस आ जाते हैं। या आसपास के नदी या तालाब में भी अस्थियाँ प्रवाहित कर देते हैं। पारिवारिक स्थिति के अनुसार कुछ गरीब कोल तीसरे दिन ही मृतक का पिण्डदान गंगाजी में करके तथा दान दक्षिणा देकर अंतिम क्रिया पूरी कर देते है और मुण्डन कराकर वापस घर लौट आते हैं। तीसरे दिन ही अंतिम क्रिया पूर्ण करने को 'तिसरिया' कहते है।

मृत्यु के बाद अगले दश दिनों तक अग्निदान देने वाला (दग्दध) का भोजन अलग बनता है, चूल्हे का मुंह दक्षिण दिशा की ओर रहता है। प्रतिदिन एक पत्तल में खाना (दाल, चावल रोटी) तथा दोना में पानी भरकर मृतक के लिए घर के बाहर रखते हैं। दग्दहा सदैव लोहे की किसी वस्तु को लिए रहता है यह मान्यता है कि शरीर को जलाने से जीव क्रुद्ध रहता है और जलाने वाले को हानि पहुँचा सकता है, लोहे से प्रेत आत्मा दूर रहती है तथा सदैव एक व्यक्ति साथ में होता है। घर में जो भोजन बनता है उसमें हल्दी नहीं पड़ती, छौंक नहीं पड़ता, अधिकतर छिलके वाली उड़द की दाल बनती है, पहले दग्दहा भोजन करता है उसके बाद सब लोग भोजन करते हैं। कोलों की यह मान्यता है कि दस दिन तक मृतक की आत्मा घर के आसपास किसी न किसी रूप में रहती है वह भूखी प्यासी न रहे इसलिए भोग रखा जाता है। सूतक व दस दिनों में बाल कटवाना तथा तेल–साबुन लगाना, दाढ़ी बनाना, चोटी, बिन्दी, काजल, सिन्दूर लगाना व भिखारी को भिक्षा देना वर्जित होता है।

अस्थियाँ जल में प्रवाहित करने के बाद घर के पास नियत पीपल के पेड़ में दो घड़े टांग दिए जाते है एक घड़े में प्रतिदिन सुबह और शाम को पानी डाला जाता है तथा दूसरे घड़े में शाम को दीपक जलाया जाता है। साथ ही नहाने के स्थान (तालाब, नदी, कुआ) के पास एक गड्ढा खोदकर कुश गाड़ दिया जाता है जिस पर अगले 7 दिनों तक स्नान करने के बाद तिल और अक्षत अंजुली में लेकर पानी डाला जाता है। यह सभी परिवार जन (स्त्री, पुरुष, बालक) करते है। परिवार में 10 दिनों तक सूतक माना जाता है। इस समय गरीब कोल परिवार की सहायता गांव तथा आसपास के सम्पन्न लोग तथा रिश्तेदार अनाज, वस्त्र, पैसा देकर सहायता करते है तथा आगामी भोज केलिए प्रबंध करते हैं।

दसवें दिन रिश्तेदार, गांव तथा परिवार के लोग मृतक के घर एकत्रित होते हैं सभी पुरुष लोग मिलकर नदी या तालाब के किनारे जाते है और वहाँ नाई से मुण्डन कराते है लेकिन सिर पर थोड़ा सा बाल (चुटिया) छोड़ देते है। परिवार की स्त्रियाँ (विधवा स्त्री) के साथ स्नान घाट पर जाती है और स्नान करके चावल घुलकर, पानी लेकर वापस आती है। इसी समय विधवा स्त्री अपने कपड़े उतारकर सफेद धोती पहनकर रोती बिलखती हुई वापस आती है। प्रातः काल से ही घर की स्त्रियाँ साफ सफाई, लिपाई पुताई करती है घर के सभी कपड़े धोए जाते हैं मिट्ठी के बर्तन फेंक दिए जाते है या नये बदल दिए जाते हैं। घर पर स्त्रियाँ दाल चावल आदि भोजन तैयार करती है। पुरुष बाल बनवाकर स्नान करते है और धुले हुए कपड़े पहनते है। इसके बाद बसोर को विधिवत भोजन कराया जाता है। यथास्थिति बसोर को कपड़े, बर्तन, अनाज, दैनिक जरूरत की चीचें, गाय–बछड़े, दान दी जाती है। उसको हवा की जाती है, हर प्रकार से उसकी सेवा करके मनाते है और पीपल के पेड़ पर लटकती हुई गगरी (घड़े) को तोड़ने के लिए कहा जाता है, जिसे वह तोड़ देता है और सब सामान लेकर अपने घर चला जाता है। बसोर की विदाई के पश्चात सभी लोक मृतक के घर वापस आ जाते हैं। घर पर सभी लोगों को पंगत में बैठाकर खाना खिलाया जाता है। पहले अग्निदान करने वाला व्यक्ति भोजन निकालता है तथा सब लोग अपने पत्तल से भोजन निकालते हैं और बाद में खाना खाते है। खाना खाने के बाद भी पत्तल में कुछ भोजन बचा देते है। भोजन के बाद लोग वापस चले जाते हैं। इस दिन बचा हुआ भोजन फेंक दिया जाता है घर में नहीं रखते हैं।

मृत्यु के तेरहवें दिन भी मृतक के नाम पर भोजन कराने की परम्परा है इसके लिए तैयारियाँ बारहवें दिन से ही शुरू हो जाती है परिवार तथा करीबी रिश्तेदार आ जाते हैं। तेरहवें दिन सुबह से ही सब्जी, चावल, दाल, पूड़ी, सेवंई, बुदिंया आदि अनेक व्यंजन तैयार किए जाते हैं। सभी व्यंजन तैयार हो जाने के पश्चात सबसे पहले करीबी रिश्तेदारों को पंगत में बैठाकर खाना खिलाया जाता है उसके बाद पूरे दिन भोजन कराया जाता है। गांव के आसपास के लोगों तथा रिश्तेदारों सभी को आमंत्रित किया जाता है। भोजन के बाद पान खिलाया जाता है, भोजन के बाद प्रायः सभी रिश्तेदार वापस चले जाते हैं। इसके साथ ही मृतक संस्कार सम्पन्न हो जाता है। वर्ष भर आने वाले त्योहारों तथा पर्वों पर मृतक को याद किया जाता है तथा उनका शोक मनाते हैं तथा पितृपक्ष में पितरों के बारे में यह मान्यता है कि वे वापस अपने वंशजों के पास आते है इस पखवाड़े (15 दिन) तक सुबह द्वार तथा गेट के पास गोबर से लीपकर कुछ चावल के दानें तथा फूल पितरों के लिए अर्पित करते हैं, नवमी के दिन सभी मातृ–पितरों के लिए निर्धारित होता है। उस दिन पूड़ी आदि व्यंजन बनते है तथा पूरे पितृपक्ष में कौओं को भोजन कराया जाता है पितरों के लिए खाना घर के बाहर रखा जाता है। जिस तिथि को मृतक की मृत्यु हुई होती है पितृपक्ष में उस तिथि से मृतक को याद करते है तथा अपने कुटुम्ब जनों तथा करीबी रिश्तेदारों को आमंत्रित करके भोजन कराया जाता है।

सन्दर्भ

ग्रिफिथ्स, डब्ल्यू जी., दि कोल ट्राइब्स ऑफ सेन्ट्रल इण्डिया, रायल एशियाटिक ऑफ बंगाल, 1946

शांडिल्य, महेशचन्द्र, कोल, मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्, भोपाल, 1999

विकल, गोमती प्रसाद, बघेली संस्कृति और साहित्य, राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश भोपाल, 1999

तिवारी कपिल, संस्कार गीत, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद् प्रकाशन, भोपाल, 2006

चौमासा पत्रिका, अंक 32, सम्पादक कपिल तिवारी, बघेलखण्ड की लोक वाचिक परम्परा पर केन्द्रित, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद् प्रकाशन, 1993

चौमासा पत्रिका, सम्पादक– अशोक मिश्रा, मृत्यु संस्कार विशेषांक, लेख– मृत्यु संस्कार एक अनुष्ठान, डॉ. दुर्गेश दीक्षित, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद् प्रकाशन, अंक 95 जुलाई–अक्टूबर, 2014

चौमासा पत्रिका, सम्पादक– अशोक मिश्रा, मृत्यु संस्कार विशेषांक, लेख– बघेलखण्ड के मृत्यु गीत, बाबूलाल दाहिया, पूर्वाक्त

चौमासा पत्रिका, सम्पादक– अशोक मिश्रा, मृत्यु संस्कार विशेषांक, लेख– मृतक संस्कार : सामाजिक मनोवैज्ञानिक पक्ष, डॉ. मालती शर्मा, पूर्वाक्त

चौमासा पत्रिका, सम्पादक– अशोक मिश्रा, मृत्यु संस्कार विशेषांक, लेख– मृत्यु संस्कार लोक का परिसर, श्यामसुन्दर दुबे, पूर्वाक्त

चौमासा पत्रिका, सम्पादक– अशोक मिश्रा, मृत्यु संस्कार विशेषांक, लेख– मृत्यु संस्कार, डॉ. देवदत्त द्विवेदी, पूर्वाक्त